B.A. II Hindi Hons.

'हिन्दी साहित्य का काल विभाजन' का शेषांश

डॉ॰ सतीशचन्द्र पाठक, एस॰एस॰ कॉ॰
जहानाबाद

काव्य के उपजीव्य बन गये। इसी प्रकार गद्य में भी आचार्य द्विवेदी के निर्देश पर ही साहित्य का सृजन निर्धारित होता था। स्वयं द्विवेदी जी ने एक निबंध लिखा था- "कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता" - जो सरस्वती पत्रिका में छपा था। इसमें उन्होंने साहित्यकारों को अपनी लेखनी चलाने के लिए एक विषय सुझाया था। इससे प्रेरित होकर मैथिली शरण गुप्त ने 'साकेत' की रचना की थी। इस काव्य की नायिका उर्मिला को बनाया गया था। कालान्तर में इसी पृष्ठभूमि पर आधारित 'यशोधरा' की रचना हुई जिसकी नायिका भगवान बुद्ध की पत्नी यशोधरा को बनाया गया था। दोनों काव्यों में पात्र एवं स्थान भिन्न-भिन्न हैं किन्तु परिस्थितियाँ प्रायः एक सी ही है - पति का प्रवासी हो जाना। गद्य साहित्य का भी यही हाल था। द्विवेदी जी ऐसे समर्थ साहित्यकार थे कि सरस्वती पत्रिका में भिन्न-भिन्न नामों से स्वयं ही निबंध लिखते थे। इस प्रकार इनके निबंधों की संख्या बढ़ती चली गयी। यही कारण है कि इन्हें हिन्दी निबंध साहित्य का जॉनसन कहा जाने लगा था। डॉ॰ जॉनसन अंग्रेजी साहित्य के अत्यन्त उत्कृष्ट निबंधकार थे। इस प्रकार आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी भाषा का भी नियमन किया, व्याकरण सम्मत बनाने का कुछ प्रयास किया। इस रूप में उन्होंने हिन्दी भाषा का बड़ा उपकार किया। ढीले हो करण पर नियंत्रण करके हिन्दी साहित्य को घर-घर में पहुँचा दिया। अब साहित्य के पठन-पाठन में एक दूसरे से आँखें चुराने की आवश्यकता नहीं रह गयी थी। साहित्य पूर्णतः नैतिक एवं समाज के अनुकूल हो गया था।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि संवत 1900 से साहित्य की दशा एवं दिशा सर्वथा परिवर्तित हो जाती थी। राजनैतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक स्थितियों में आये परिवर्तन से साहित्य कितना प्रभावित हो सकता है, यह हिन्दी साहित्य को देखने से स्पष्ट हो जाता है।